अधिकार

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» अधिकार क्या हैं?

प्रश्न 1 (आसान). क्या तुम्हें हर दिन चॉकलेट खाने का अधिकार है?
उत्तर – नहीं, ये एक इच्छा है, अधिकार नहीं।

प्रश्न 2 (आसान). क्या तुम्हें बीमार पड़ने पर डॉक्टर से इलाज करवाने का अधिकार है?
उत्तर – हाँ, ये स्वास्थ्य का अधिकार है।

प्रश्न 3 (मध्यम). अगर सरकार स्कूल में अचानक सभी बच्चों के लिए एक ही रंग के कपड़े पहनना अनिवार्य कर दे, तो क्या यह बच्चों के किसी अधिकार का हनन है?
उत्तर – नहीं, क्योंकि यूनिफॉर्म स्कूल के नियम का हिस्सा है और यह बच्चों के सम्मान या गरिमापूर्ण जीवन के लिए बाधक नहीं है। लेकिन अगर यह बच्चों को अपनी पहचान बनाने से रोके या उनके विकास में बाधा बने, तो यह एक बहस का मुद्दा बन सकता है।

प्रश्न 4 (कठिन). मान लीजिए एक गाँव में कुछ लोग कहते हैं कि उन्हें सुबह देर तक तेज़ आवाज़ में संगीत बजाने का अधिकार है। क्या यह एक 'अधिकार' है?
उत्तर – नहीं। हालांकि मनोरंजन एक इच्छा हो सकती है, लेकिन 'तेज़ आवाज़ में संगीत बजाना' दूसरों के शांति से रहने के अधिकार, स्वास्थ्य के अधिकार (नींद पूरी न होना) और आराम के अधिकार का हनन कर सकता है। अधिकार वही होते हैं जो सभी के सम्मान और गरिमापूर्ण जीवन को सुनिश्चित करें, न कि दूसरों को परेशान करें।

» अधिकारों की सार्वभौमिक प्रकृति और महत्व

प्रश्न 5 (आसान). क्या बच्चों के खेलने का अधिकार सार्वभौमिक है? हाँ या नहीं?
उत्तर – हाँ

प्रश्न 6 (आसान). सार्वभौमिक अधिकारों का मतलब क्या है?
उत्तर – ऐसे अधिकार जो सभी मनुष्यों के लिए समान और हर जगह लागू होते हैं।

प्रश्न 7 (मध्यम). कोई एक अधिकार बताएं जो आपकी राय में सार्वभौमिक है और क्यों?
उत्तर – स्वच्छ हवा और पानी का अधिकार। यह सार्वभौमिक है क्योंकि हर इंसान को जीवित रहने और स्वस्थ रहने के लिए इसकी आवश्यकता होती है, चाहे वह कहीं भी रहता हो।

प्रश्न 8 (कठिन). अधिकारों की सार्वभौमिक प्रकृति और महत्व में क्या अंतर है? समझाएं।
उत्तर – सार्वभौमिक प्रकृति का अर्थ है कि अधिकार सभी मनुष्यों के लिए बिना किसी भेदभाव के समान रूप से लागू होते हैं। वहीं, महत्व का अर्थ है कि वे अधिकार मानव जीवन, गरिमा और क्षमताओं के विकास के लिए कितने आवश्यक हैं। प्रकृति उनकी समानता बताती है, जबकि महत्व उनकी उपयोगिता और अनिवार्यता बताता है।

» अधिकारों का उद्गम: प्राकृतिक अधिकार से मानवाधिकार तक

प्रश्न 9 (आसान). प्राकृतिक अधिकार किस शताब्दी में प्रचलित थे?
उत्तर – सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में।

प्रश्न 10 (आसान). प्राकृतिक अधिकारों के कोई दो उदाहरण दें।
उत्तर – जीवन का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, संपत्ति का अधिकार।

प्रश्न 11 (मध्यम). मानवाधिकार की अवधारणा प्राकृतिक अधिकारों से किस प्रकार भिन्न है?
उत्तर – मानवाधिकारों में यह नहीं माना जाता कि वे ईश्वर प्रदत्त हैं, बल्कि उन्हें मानव गरिमा और समाज द्वारा स्वयं अर्जित माना जाता है।

प्रश्न 12 (कठिन). अगर प्राकृतिक अधिकारों को ईश्वर प्रदत्त माना जाता था, तो मानवाधिकारों की नई अवधारणा की ज़रूरत क्यों पड़ी?
उत्तर – मानवाधिकारों की ज़रूरत इसलिए पड़ी क्योंकि 'प्राकृतिक होने का विचार आज अस्वीकार्य लगता है'। लोग अब अधिकारों को ऐसी गारंटियों के रूप में देखते हैं जिन्हें मनुष्य ने 'स्वयं ही खोजा या पाया' है, ताकि सभी को 'समान महत्त्व' और 'गरिमापूर्ण' जीवन मिले, न कि किसी दैवीय शक्ति से। यह सामाजिक समानता और न्याय पर अधिक बल देता है।

» मानवाधिकारों की अवधारणा

प्रश्न 13 (आसान). मानवाधिकारों की अवधारणा के अनुसार, हर इंसान को किस आधार पर अधिकार मिलते हैं?
उत्तर – सिर्फ इंसान होने के आधार पर।

प्रश्न 14 (आसान). क्या मानवाधिकारों में किसी व्यक्ति की जाति या धर्म का भेदभाव होता है?
उत्तर – नहीं, मानवाधिकार सभी मनुष्यों के लिए समान होते हैं, बिना किसी भेदभाव के।

प्रश्न 15 (मध्यम). कांट के अनुसार, 'कीमत' और 'गरिमा' में क्या अंतर है? उदाहरण देकर समझाओ।
उत्तर – कीमत वाली चीज़ को बदला जा सकता है (जैसे पेन), लेकिन गरिमा अमूल्य होती है और बदली नहीं जा सकती (जैसे मनुष्य की इज़्ज़त)।

प्रश्न 16 (कठिन). मानवाधिकारों की अवधारणा 'नस्ल, जाति, धर्म और लिंग पर आधारित मौजूदा असमानताओं' को चुनौती कैसे देती है?
उत्तर – यह अवधारणा बताती है कि सभी मनुष्य समान हैं और कोई भी किसी से कम नहीं है, जिससे इन भेदभावों को खत्म करने की ज़रूरत महसूस होती है।

» कानूनी अधिकार और राज्यसत्ता की भूमिका

प्रश्न 17 (आसान). हमारे देश के संविधान में बुनियादी अधिकारों को क्या कहते हैं?
उत्तर – मौलिक अधिकार

प्रश्न 18 (आसान). क्या सिर्फ नैतिक अपील से अधिकारों की सुरक्षा हो सकती है?
उत्तर – नहीं, सरकार और कानून का समर्थन ज़रूरी है।

प्रश्न 19 (मध्यम). अगर किसी व्यक्ति को उसकी मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा पाने का अधिकार है, तो इसे पूरा करने में राज्यसत्ता की क्या भूमिका होगी?
उत्तर – राज्यसत्ता को अपनी मातृभाषा में शिक्षा देने वाले स्कूल खोलने होंगे या ऐसे प्रावधान करने होंगे जिससे बच्चे अपनी मातृभाषा में शिक्षा पा सकें।

प्रश्न 20 (कठिन). कुछ सिद्धांतकार कहते हैं कि अधिकार ऐसे दावे हैं जिन्हें राज्य ने मान्य किया हो। इस कथन से आप कितना सहमत हैं और क्यों?
उत्तर – मैं इस कथन से सहमत हूं क्योंकि किसी भी अधिकार को वास्तविक और प्रभावी बनाने के लिए राज्य की कानूनी मान्यता और समर्थन आवश्यक है। इसके बिना, वे केवल नैतिक दावे रह जाते हैं जिनकी कोई बाध्यकारी शक्ति नहीं होती और उनका उल्लंघन होने पर कोई वैधानिक उपचार भी उपलब्ध नहीं होता।

» राज्य पर अधिकारों द्वारा लगाए गए वैधानिक दायित्व

प्रश्न 21 (आसान). अगर आपको लगता है कि आपका 'स्वतंत्रता का अधिकार' छीना जा रहा है, तो राज्य का पहला दायित्व क्या होगा?
उत्तर – राज्य को आपकी गिरफ्तारी का उचित कारण बताना होगा और वारंट दिखाना होगा।

प्रश्न 22 (आसान). स्वच्छ पर्यावरण के अधिकार के संबंध में राज्य पर क्या वैधानिक दायित्व है?
उत्तर – राज्य को स्वच्छ पर्यावरण बनाए रखने के लिए कानून बनाने होंगे, जैसे प्रदूषण नियंत्रण के नियम।

प्रश्न 23 (मध्यम). राज्य पर अधिकारों द्वारा लगाए गए दो वैधानिक दायित्वों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – पहला, 'कार्य करने का दायित्व': जीवन का अधिकार राज्य को कानून बनाने को बाध्य करता है जो दूसरों से क्षति से बचाएं और दोषियों को दंडित करें। दूसरा, 'कार्य न करने का दायित्व': स्वतंत्रता का अधिकार राज्य को मनमाने ढंग से किसी को गिरफ्तार करने से रोकता है।

प्रश्न 24 (कठिन). अगर कोई सरकार राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर नागरिकों की 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' पर प्रतिबंध लगाती है, तो क्या यह राज्य पर अधिकारों द्वारा लगाए गए वैधानिक दायित्वों का उल्लंघन होगा? तर्क दीजिए।
उत्तर – हाँ, यह उल्लंघन हो सकता है। हालांकि राष्ट्रीय सुरक्षा महत्वपूर्ण है, लेकिन राज्य पर यह दायित्व है कि वह नागरिकों की स्वतंत्रता को बिना 'जायज कारण' और 'न्यायिक समीक्षा' के न छीने। अत्यधिक प्रतिबंध व्यक्ति के अधिकारों को खतरे में डाल सकते हैं, जो राज्य के वैधानिक दायित्वों के विरुद्ध है।

» अधिकारों के प्रकार: राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक

प्रश्न 25 (आसान). अगर आप किसी सरकारी योजना का लाभ उठाना चाहते हैं, तो यह किस प्रकार का अधिकार है?
उत्तर – आर्थिक अधिकार

प्रश्न 26 (आसान). अपनी मातृभाषा में पढ़ाई करना किस अधिकार में आता है?
उत्तर – सांस्कृतिक अधिकार

प्रश्न 27 (मध्यम). किसी राजनीतिक दल का सदस्य बनना और चुनाव प्रचार में भाग लेना किस प्रकार के अधिकार हैं? समझाओ।
उत्तर – यह 'राजनीतिक अधिकार' है, क्योंकि यह हमें देश की राजनीतिक प्रक्रिया में 'भागीदारी का हक' देता है और 'प्रतिनिधि चुनने' व 'चुनाव लड़ने' की स्वतंत्रता से जुड़ा है।

प्रश्न 28 (कठिन). क्या 'बेरोजगारी भत्ता' का अधिकार 'राजनीतिक' या 'आर्थिक' में से किस श्रेणी में आता है और क्यों?
उत्तर – बेरोजगारी भत्ता 'आर्थिक अधिकार' की श्रेणी में आता है। क्योंकि यह 'बुनियादी ज़रूरतें पूरी' करने और 'न्यूनतम भत्ता' पाने से संबंधित है, जिसका उद्देश्य व्यक्ति को 'भोजन, वस्त्र, आवास' जैसी मूलभूत ज़रूरतों को पूरा करने में मदद करना है, ताकि वह गरिमापूर्ण जीवन जी सके।

» अधिकार और जिम्मेदारियाँ

प्रश्न 29 (आसान). तुम्हें स्कूल में पढ़ने का अधिकार है। तुम्हारी एक जिम्मेदारी बताओ।
उत्तर – स्कूल के नियमों का पालन करना और पढ़ाई में मन लगाना।

प्रश्न 30 (आसान). तुम्हें सार्वजनिक पार्क में जाने का अधिकार है। तुम्हारी क्या जिम्मेदारी है?
उत्तर – पार्क को साफ रखना और पेड़-पौधों को नुकसान न पहुंचाना।

प्रश्न 31 (मध्यम). अगर तुम्हें अपनी पसंद का संगीत सुनने का अधिकार है, तो दूसरों के प्रति तुम्हारी क्या जिम्मेदारी है, खासकर अगर तुम सार्वजनिक जगह पर हो?
उत्तर – अपनी पसंद का संगीत सुनते समय यह सुनिश्चित करना कि उसकी आवाज़ इतनी तेज़ न हो कि दूसरों को परेशानी हो, या हेडफोन का इस्तेमाल करना।

प्रश्न 32 (कठिन). राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर सरकारें अक्सर नागरिकों के अधिकारों पर कुछ प्रतिबंध लगाती हैं (जैसे फोन टैप करना)। एक नागरिक के रूप में, तुम्हारी क्या जिम्मेदारी बनती है जब तुम्हें लगता है कि सरकार तुम्हारे अधिकारों का ज्यादा उल्लंघन कर रही है?
उत्तर – एक जागरूक नागरिक के रूप में, ऐसे प्रतिबंधों पर 'सवाल उठाना' और शांतिपूर्ण तरीकों से 'विरोध' करना, यह सुनिश्चित करने के लिए कि राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर अधिकारों का दुरुपयोग न हो।

» अधिकारों पर नियंत्रण और उनकी सीमाएं

प्रश्न 33 (आसान). क्या आप देर रात तेज़ आवाज़ में गाने बजा सकते हैं? क्यों नहीं?
उत्तर – नहीं, क्योंकि इससे पड़ोसियों को परेशानी होगी, जो उनके शांति से रहने के अधिकार का उल्लंघन है।

प्रश्न 34 (आसान). अगर कोई व्यक्ति भीड़ में अफवाह फैलाए, तो क्या यह उसकी 'speech freedom' में आता है?
उत्तर – नहीं, अफवाहें फैलाने से समाज में अशांति फैल सकती है, इसलिए यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के दायरे से बाहर है।

प्रश्न 35 (मध्यम). राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर सरकारें 'phone tapping' क्यों करती हैं? क्या यह सही है?
उत्तर – राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सरकारें 'phone tapping' कर सकती हैं, लेकिन यह 'misuse' हो सकता है। इसे सिर्फ़ विशेष परिस्थितियों में, कानूनी प्रक्रिया से और सीमित समय के लिए ही करना चाहिए ताकि नागरिकों की निजता का अधिकार सुरक्षित रहे।

प्रश्न 36 (कठिन). क्या सरकार को आतंकवाद के संदेह में किसी को अनिश्चित काल के लिए हिरासत में रखने की अनुमति होनी चाहिए, भले ही कोई ठोस सबूत न हो? कारण बताओ।
उत्तर – नहीं, अनिश्चित काल के लिए हिरासत में रखना 'due process of law' और 'right to a fair trial' का उल्लंघन है। भले ही आतंकवाद का संदेह हो, व्यक्ति को अदालत में पेश करने, कानूनी सलाह लेने और अपना बचाव करने का अधिकार है। 'national security' के नाम पर 'civil liberties' का इतना हनन नहीं होना चाहिए, क्योंकि इसका 'misuse' हो सकता है और सरकार 'tyrannical' बन सकती है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लो, तुम्हें अपनी बात कहने का मन है, लेकिन तुम्हारे दोस्त तुम्हें चुप करा रहे हैं। क्या अपनी बात कहना एक 'अधिकार' है?

› पहला कदम: सोचो, क्या 'अपनी बात कहना' एक 'गरिमापूर्ण जीवन' के लिए ज़रूरी है? हाँ, क्योंकि अपनी राय व्यक्त करना हर इंसान के आत्मसम्मान के लिए महत्वपूर्ण है।

› दूसरा कदम: क्या समाज इसे एक 'वैध दावा' मानता है? बिलकुल! लोकतांत्रिक समाजों में 'स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अधिकार' बहुत महत्वपूर्ण है।

› तीसरा कदम: क्या यह सिर्फ एक निजी इच्छा है या एक बुनियादी ज़रूरत भी है? यह एक बुनियादी ज़रूरत है, जिससे व्यक्ति अपनी पहचान बनाता है और समाज में योगदान देता है।

उत्तर – हाँ, अपनी बात कहना एक 'अधिकार' है, जिसे 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' कहते हैं।

उदाहरण 2. एक ऐसे अधिकार का उदाहरण दें जो सार्वभौमिक प्रकृति का हो और बताएं कि यह व्यक्तियों की बेहतरी के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

› पहला कदम: हमें एक ऐसे अधिकार के बारे में सोचना होगा जो दुनिया के सभी लोगों के लिए लागू होता हो। उदाहरण के लिए, 'शिक्षा का अधिकार' (Right to Education).

› दूसरा कदम: अब यह बताना है कि यह अधिकार सार्वभौमिक क्यों है। शिक्षा का अधिकार हर बच्चे के लिए ज़रूरी है, चाहे वह दुनिया के किसी भी कोने में रहता हो, किसी भी लिंग या जाति का हो। यह किसी एक देश या वर्ग तक सीमित नहीं है।

› तीसरा कदम: अब इसके महत्व पर चर्चा करनी है, यानी यह हमारी बेहतरी के लिए क्यों ज़रूरी है। 'शिक्षा का अधिकार हमारी तर्क-शक्ति विकसित करने में मदद करता है।' यह हमें सोचने-समझने की शक्ति देता है। 'हमें उपयोगी कौशल प्रदान

करता है।' हमें ऐसे हुनर सिखाता है जिनसे हम जीवन में आगे बढ़ सकें। 'और जीवन में सूझ-बूझ के साथ चयन करने में सक्षम बनाता है।' हम सही-गलत का फैसला कर पाते हैं और अपनी ज़िंदगी के लिए बेहतर चुनाव कर पाते हैं।

उत्तर – शिक्षा का अधिकार सार्वभौमिक प्रकृति का है क्योंकि यह दुनिया के हर व्यक्ति, विशेषकर बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो। यह व्यक्ति की तर्क-शक्ति विकसित करता है, उपयोगी कौशल प्रदान करता है और उन्हें जीवन में सूझ-बूझ के साथ सही विकल्प चुनने में सक्षम बनाता है, जिससे उनका समग्र विकास और बेहतरी सुनिश्चित होती है।

उदाहरण 3. प्राकृतिक अधिकारों और मानवाधिकारों के बीच के मुख्य अंतर को स्पष्ट करें।

› पहला, हमें समझना होगा कि 'प्राकृतिक अधिकार' क्या थे। ये वे अधिकार थे जिन्हें 'सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी' के 'राजनीतिक सिद्धांतकार' मानते थे कि हमें 'प्रकृति या ईश्वर' ने दिए हैं। ये 'जन्म से' ही हमारे साथ होते हैं और कोई 'शासक उन्हें हमसे छीन नहीं सकता'। उदाहरण थे 'जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति का अधिकार' ।

› अब देखते हैं 'मानवाधिकार'। 'हाल के वर्षों में प्राकृतिक अधिकार शब्द से ज़्यादा मानवाधिकार शब्द का प्रयोग हो रहा है'। ऐसा इसलिए है क्योंकि 'उन के प्राकृतिक होने का विचार आज अस्वीकार्य लगता है'। आज हम मानते हैं कि अधिकार 'ऐसी गारंटियों के रूप में देखने की प्रवृत्ति बढ़ी है जिन्हें मनुष्य ने एक अच्छा जीवन जीने के लिए स्वयं ही खोजा या पाया है'।

› मुख्य अंतर यह है कि 'मानव अधिकारों के पीछे मूल मान्यता यह है कि सभी लोग, मनुष्य होने मात्र से कुछ चीजों को पाने के अधिकारी हैं।' मतलब, मानव होने के नाते हमें कुछ चीजें मिलनी चाहिए, क्योंकि 'एक मानव के रूप में हर आदमी विशिष्ट और समान महत्त्व का है'। यहाँ ज़ोर 'मानवीय गरिमा' पर है, न कि किसी दैवीय शक्ति पर। ये नस्ल, जाति, धर्म और लिंग पर आधारित 'मौजूदा असमानताओं को चुनौती' देने के लिए हैं।

उत्तर – प्राकृतिक अधिकार 17वीं-18वीं सदी की अवधारणा थी, जो मानती थी कि अधिकार ईश्वर या प्रकृति द्वारा प्रदत्त और जन्मजात होते हैं, जिन्हें कोई नहीं छीन सकता। मानवाधिकार आधुनिक अवधारणा है, जो मानती है कि सभी मनुष्य समान और गरिमापूर्ण जीवन के हकदार हैं, और ये अधिकार मानव समाज द्वारा स्वयं विकसित किए गए हैं ताकि सभी को सम्मान मिले। मूल अंतर उनके उद्गम और आधारभूत दर्शन में है।

उदाहरण 4. मानव अधिकारों की अवधारणा का मुख्य आधार क्या है और कांट ने मानवीय गरिमा पर क्या कहा?

› पहला, मानवाधिकारों का मुख्य आधार यह है कि 'सभी मनुष्य विशिष्ट और समान महत्त्व के हैं' और 'उन्हें अपनी पूरी संभावना को साकार करने का अवसर मिलना चाहिए'।

› दूसरा, जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कांट के अनुसार, हर चीज़ की 'कीमत' या 'गरिमा' होती है।

› तीसरा, 'जिसकी कीमत होती है, उसकी जगह उसवेफ समतुल्य कोई दूसरी चीज़ भी रखी जा सकती है', लेकिन 'जो तमाम कीमतों से उफपर हो और जिसका कोई समतुल्य न हो, उसकी गरिमा होती है' - और मनुष्य की यही गरिमा है।

› चौथा, कांट मानते थे कि मनुष्यों का सम्मान इसलिए नहीं करना चाहिए कि वे उपयोगी हैं, बल्कि इसलिए 'क्योंकि वे, आखिरकार, मनुष्य हैं'।

उत्तर – मानवाधिकारों का मुख्य आधार है 'सभी मनुष्यों का विशिष्ट और समान महत्व', जिससे उन्हें अपनी पूरी क्षमता को साकार करने का अवसर मिल सके। कांट ने समझाया कि मनुष्य की कोई कीमत नहीं होती, बल्कि उसकी 'गरिमा' होती है, जो उसे अन्य सभी चीज़ों से ऊपर रखती है और जिसका कोई विकल्प नहीं होता, क्योंकि मनुष्य अपने आप में मूल्यवान है।

उदाहरण 5. मान लीजिए, एक व्यक्ति 'स्वतंत्रता का अधिकार' माँग रहा है, लेकिन राज्य उसे गिरफ्तार कर लेता है। क्या यह 'कानूनी अधिकार और राज्यसत्ता की भूमिका' के तहत सही है?

› सबसे पहले हमें देखना होगा कि क्या 'स्वतंत्रता का अधिकार' हमारे देश में एक 'कानूनी अधिकार' है, खासकर 'मौलिक अधिकार'?

› हाँ, हमारे संविधान में 'Right to Freedom' यानी स्वतंत्रता का अधिकार एक 'मौलिक अधिकार' है।

› अब, अगर राज्यसत्ता (पुलिस) किसी को गिरफ्तार करती है, तो उसे 'अपनी कार्रवाई को जायज ठहराना पड़ेगा' (justify its action)।

› उसे उस व्यक्ति को 'किसी न्यायालय के समक्ष पेश करना होगा' (produce before a court) और बताना होगा कि 'क्यों उसकी स्वतंत्रता में कटौती की जा रही है' (why his freedom is being curtailed)।

› उसे 'गिरफ्तारी का वारंट दिखाना' (show an arrest warrant) भी ज़रूरी हो सकता है, जैसा कि किताब में भी लिखा

है।

› अगर राज्य बिना किसी ठोस कारण और कानूनी प्रक्रिया के किसी को गिरफ्तार करता है, तो वह 'राज्यसत्ता की भूमिका' का दुरुपयोग कर रहा है और व्यक्ति के 'कानूनी अधिकार' का उल्लंघन कर रहा है।

उत्तर – नहीं, यह सही नहीं है। 'स्वतंत्रता का अधिकार' एक कानूनी अधिकार है। राज्यसत्ता को गिरफ्तारी के लिए कानूनी प्रक्रिया का पालन करना होगा, कारण बताना होगा और व्यक्ति को न्यायालय के समक्ष पेश करना होगा।

उदाहरण 6. मान लीजिए, राज्य में कोई सड़क परियोजना बन रही है जिसके लिए लोगों की जमीनें ली जा रही हैं। आपके भूमि अधिकार (और संपत्ति के अधिकार) के संदर्भ में राज्य पर क्या वैधानिक दायित्व बनते हैं?

› पहला कदम, 'राज्य को यह सुनिश्चित करना होगा' कि जिन लोगों की जमीनें ली जा रही हैं, उन्हें 'उचित मुआवजा' मिले। यह उनके संपत्ति के अधिकार का सम्मान है।

› दूसरा कदम, राज्य को 'पारदर्शी प्रक्रिया' अपनानी होगी। यानी, ज़मीन अधिग्रहण का कारण स्पष्ट बताना होगा और लोगों को 'अपनी बात रखने का मौका' देना होगा।

› तीसरा कदम, अगर विस्थापित हो रहे हैं तो 'उनके पुनर्वास की उचित व्यवस्था' करनी होगी। यह उनके 'गरिमापूर्ण जीवन जीने के अधिकार' से जुड़ा है।

› चौथा कदम, राज्य 'मनमानी' नहीं कर सकता। 'बिना कानूनी प्रक्रिया' के किसी की ज़मीन नहीं ले सकता। उसे अदालत के सामने अपनी कार्रवाई को जायज ठहराना होगा।

उत्तर – इस प्रकार, राज्य पर यह वैधानिक दायित्व है कि वह भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया को न्यायसंगत, पारदर्शी और मानवीय तरीके से पूरा करे, लोगों के अधिकारों का सम्मान करते हुए उन्हें उचित मुआवजा और पुनर्वास प्रदान करे।

उदाहरण 7. एक छात्र को 'अपने स्कूल में एक वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित करने' की अनुमति मिलती है, जहाँ वह अपनी बात रख सकता है। यह किस प्रकार का अधिकार है? और अगर उसे 'स्कूल में अपनी पसंदीदा कला सीखने' की भी अनुमति मिले तो वो कौन सा अधिकार होगा?

› सबसे पहले पहचानो कि वाद-विवाद प्रतियोगिता में क्या हो रहा है – यहाँ विचारों को व्यक्त किया जा रहा है, जो कि राजनीतिक भागीदारी का हिस्सा है।

› तो 'वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित करने' की अनुमति 'राजनीतिक अधिकार' में आएगी, क्योंकि यह 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' से जुड़ा है।

› अब देखो 'पसंदीदा कला सीखने' में क्या है – यह अपनी संस्कृति, अपनी पहचान को बढ़ावा देने से जुड़ा है।

› तो 'स्कूल में अपनी पसंदीदा कला सीखने' की अनुमति 'सांस्कृतिक अधिकार' का उदाहरण है।

उत्तर – वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित करने का अधिकार: राजनीतिक अधिकार। अपनी पसंदीदा कला सीखने का अधिकार: सांस्कृतिक अधिकार।

उदाहरण 8. तुम्हें अपने विचार व्यक्त करने का अधिकार है। मान लो तुम सोशल मीडिया पर कुछ पोस्ट करना चाहते हो। तुम्हारी क्या जिम्मेदारी बनती है ताकि तुम दूसरों के अधिकारों का उल्लंघन न करो?

› पहला कदम: अपने विचारों को शांतिपूर्वक और सम्मान के साथ व्यक्त करो।

› दूसरा कदम: यह सुनिश्चित करो कि तुम्हारी पोस्ट में किसी व्यक्ति या समूह के खिलाफ़ 'नफरत या हिंसा' भड़काने वाली कोई बात न हो।

› तीसरा कदम: किसी की 'निजी जानकारी' या 'गोपनीयता' का उल्लंघन न करो, यानी बिना उनकी अनुमति के उनकी तस्वीरें या निजी बातें शेयर न करो।

› चौथा कदम: अगर कोई तुम्हारी बात से असहमत है, तो उसके 'विचारों का भी सम्मान' करो और उसे भी अपनी बात रखने दो।

उत्तर – अपने विचार व्यक्त करते समय, तुम्हारी जिम्मेदारी है कि तुम दूसरों के सम्मान, सुरक्षा और गोपनीयता के अधिकार का उल्लंघन न करो और समाज में शांति बनाए रखो।

उदाहरण 9. एक छात्र अपनी बात रखने के लिए स्कूल की दीवार पर कुछ लिख देता है। क्या यह उसकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सही उपयोग है? इस पर क्या नियंत्रण लागू होगा?

› पहला कदम यह समझना है कि 'Freedom of Expression' हर नागरिक का अधिकार है।

› दूसरा कदम यह है कि इस अधिकार का उपयोग दूसरों के अधिकारों या संपत्ति को नुकसान पहुंचाए बिना होना चाहिए।

› इस छात्र के मामले में, उसने स्कूल की 'property' (दीवार) को नुकसान पहुंचाया है और 'vandalism' किया है।

› यहां अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर 'reasonable restriction' लागू होगी, क्योंकि इससे सार्वजनिक संपत्ति को क्षति पहुंची है।

› स्कूल उसे अपनी बात कहने के लिए 'school notice board' या 'school magazine' जैसे सही प्लेटफॉर्म दे सकता है, दीवार पर लिखने की इज़ाज़त नहीं।

उत्तर – नहीं, यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सही उपयोग नहीं है। स्कूल की संपत्ति को नुकसान पहुंचाना गलत है, और इस पर 'सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा' का नियंत्रण लागू होगा।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• इस टॉपिक से 'अधिकारों की परिभाषा' और 'अधिकार क्यों महत्वपूर्ण हैं' पर सीधे प्रश्न आते हैं। इसे ध्यान से समझो!

• प्राकृतिक अधिकार और मानवाधिकार के बीच के अंतर को उदाहरणों के साथ स्पष्ट करने वाले प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं, इसलिए इन्हें ध्यान से समझें।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर 'कांट के मानवीय गरिमा के विचार' पर सीधा प्रश्न आता है, इसलिए इसे अच्छे से समझना और याद रखना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर सवाल आता है कि मानवाधिकारों को कानूनी रूप देना क्यों ज़रूरी है और राज्यसत्ता की इसमें क्या भूमिका होती है। संविधान में मौलिक अधिकारों का उदाहरण देकर समझाना बहुत ज़रूरी है।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! अक्सर 'राज्य पर अधिकारों के दायित्वों' से जुड़े सवाल पूछे जाते हैं, जिसमें 'उदाहरणों सहित स्पष्टीकरण' की उम्मीद की जाती है। इस पर खास ध्यान दें।

• बोर्ड परीक्षा में इन तीनों अधिकारों की परिभाषा और उनके दो-दो उदाहरण ज़रूर याद रखना। ये अक्सर पूछे जाते हैं।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधे सवाल आते हैं कि अधिकारों और जिम्मेदारियों के बीच क्या संबंध है। 'टिकाऊ विकास' और 'गोपनीयता के अधिकार' जैसे उदाहरणों के साथ अपनी बात को स्पष्ट रूप से समझाएं।

एक नज़र में रिवीज़न

› अधिकार = सम्मान-गरिमा हेतु आवश्यक वैध दावे, समाज द्वारा स्वीकृत।

› प्राकृतिक अधिकार (ईश्वर प्रदत्त, जन्मजात) से मानवाधिकार (मानवीय गरिमा, स्वयं खोजे गए) तक का उद्गम।

› सभी मनुष्य विशिष्ट व समान, गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार; कांट: मानवीय गरिमा अमूल्य।

› कानूनी मान्यता और राज्य समर्थन अधिकारों की सफलता की कुंजी।

› अधिकार राज्य पर कानूनी दायित्व डालते हैं: क्या करना है, क्या नहीं करना है।

› अधिकारों के तीन प्रकार: राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक - सब एक-दूसरे से जुड़े।

› अधिकारों के साथ जिम्मेदारियां आती हैं: दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना, साझा भलाई की रक्षा करना।